ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-8* November-2021
Anthology : The Research

भारतीय शास्त्रीय संगीत के कुछ प्रमुख गायन एवं वाद्यों के प्रकार

Some Major Types of Vocals and Instruments of Indian Classical Music

Paper Submission: 10/11/2021, Date of Acceptance: 20/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

प्रीति वर्मा
सहायक प्राध्यापक,
संगीत विभाग,
भगतसिंह शासकीय
स्नात्कोत्तर महाविद्यालय,
जावरा, रतलाम,
मध्यप्रदेश, भारत

सारांश

हमारा भारतीय शास्त्रीय संगीत बहुत ही समृध्द है । आम बोलचाल में अगर देखा जाए, तो संगीत से सिर्फ गायन ही समझा जाता है। परन्तु संगीत तभी पूर्ण होता है जब उसमें गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों का समावेश हो । प्रस्तुत लेख में मुख्य रूप से केवल गायन तथा वाद्यों के प्रकारों का वर्णन है। प्राचीन काल में हमारे संपूर्ण भारतवर्ष में एक ही संगीत पद्यति प्रचलित थी , परन्तु मध्य काल में मुगलो के आगमन के पश्चात् हमारा भारतीय संगीत दो प्रकार की संगीत पद्यतियों में विभाजित हो गया । चूंकि मुगलों का प्रभाव मुख्य रूप से दक्षिण भारत के कुछ प्रांतो को छोड़कर समस्त भारत में हुआ । इस कारण दक्षिण भारत में कर्नाटक संगीत का प्रचार प्रसार हुआ । और शेष संपूर्ण देश में प्रचलित संगीत हिन्दुस्तानी संगीत कहलाया ।इसी प्रकार हमारें भारतीय संगीत मेंं समस्त वाद्यों को चार वर्गो में बॉटा गया है। जिन्हें में तत् वाद्य , अवनद्य वाद्य , सुषीर वाद्य और घन वाद्य कहते हैं। हमारी युवा पीढ़ी को चाहिए कि हमारे देश की कला-संस्कृति रूपि इस अमूल्य धरोहर का सम्मान करें और उसे उन्नति के शिखर पर ले जाएँ।

Our Indian classical music is very rich. If seen in common parlance, then only singing is understood from music. But music is complete only when it includes singing, playing and dancing. The present article mainly describes only the types of singing and instruments. In ancient times only one musical system was prevalent in our entire India.But after the arrival of the Mughals in the medieval period, our Indian music was divided into two types of music systems. Since the influence of the Mughals was mainly in the whole of India except some provinces of South India. This led to the spread of Carnatic music in South India. And the music prevalent in the rest of the country was called Hindustani music. Similarly, in our Indian music, all the instruments have been divided into four categories. Which are called Tat Vadya, Avandya Vadya, Sushir Vadya and Ghan Vadya. Our young generation should respect this priceless heritage of our country in the form of art and culture and take it to the pinnacle of progress.

मुख्य शब्दः भारतीय, शास्त्रीय , संगीत, संस्कृति, गायन पद्धति, ख़्याल, घराना, ठुमरी, तराना, वर्णम, पदम,तिल्लाना, अवनद्ध, वाद्य, घन, तत,कथक, कथकली, भरतनाट्यम, मोहिनीअट्टम, ओडीसी, कुचिपुड़ी ,नृत्य |

Keywords: Indian, Classical, Music, Culture, Vocal Method, Khyal, Gharana, Thumri, Tarana, Varnam, Padam, Tillana, Avandha, Vadya, Ghana, Tat, Kathak, Kathakali, Bharatanatyam, Mohiniattam, Odissi, Kuchipudi, Nritya.

प्रस्तावना

संगीत क्या है?

पण्डित शारंग देव कृत संगीत रत्नाकर के अनुसार -**" गीतम, वाद्यम तथा नृत्यम त्रयम**

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य हमारी युवा पीढ़ी को हमारे भारतवर्ष की समृद्ध और प्राचीन गायन शैलियों, वाद्यों और नृत्यों से परिचित करवाना है। ताकि हमारी युवा पीढ़ी यह जान सके । कि हमारे भारतवर्ष की कला संस्कृति और प्राचीन परंपराएं कितनी गौरवशाली और समृद्ध हैं वर्तमान समय में पाश्चात्य संस्कृति की ओर उन्मुख हो रही हमारी युवा पीढ़ी को चाहिए कि वे आधुनिकीकरण की अंधी दौड़ का हिस्सा न बनकर अपने भारतवर्ष की महान कला. संस्कृति को न सिर्फ जाने और समझें । बल्कि उसका हिस्सा बनकर उसके विकास में सहायक बने क्योंकि कोई वृक्ष कितना ही विशाल क्यों न हो, अगर उसका संबंध उसकी जड़ों से टूट जाए तो वह कुछ ही दिनों में धीरे.धीरे सूख जाता है । ठीक इसी प्रकार मनुष्य भी कितना ही ज्ञानी हो । धनी हो ।आधुनिक हो परंतु वह तभी सफलता के सोपानों पर आगे बढ़ सकता है । जब वह अपने देश का सम्मान करे । अपनी मातृभूमि अपनी कला और संस्कृति से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सदा जुड़ा रहे।

संगीत मुच्यते।"

अर्थात गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों के समूह को संगीत कहते हैं। आम बोलचाल की भाषा में संगीत का अर्थ गाना या गायन ही समझा जाता है, परंतु सैद्धांतिक रूप से संगीत तभी पूर्ण होता है जब उसमें गायन वादन तथा नृत्य इन तीनों का समावेश हो। यहाँ पर मुख्य रूप से गायन और वाद्यों के प्रकारों का वर्णन किया जा रहा है।

गायन के प्रकार

वर्तमान समय में हमारा भारतीय शास्त्रीय संगीत दो प्रकार की पद्धतियों में विभाजित है -

1. हिंदुस्तानी संगीत पद्धति या उत्तर भारतीय संगीत पद्धति
2. कर्नाटक संगीत पद्धति या दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति।

प्राचीन काल से हमारे संपूर्ण भारत में एक ही संगीत पद्धति प्रचलित थी, परंतु मध्यकाल में मुगलों के आगमन के पश्चात कई सारे परिवर्तन हुए। अरब देशों से मुगल अपने साथ अपनी कला और संस्कृति भी साथ लाए थे। जिस कारण अरब देशों की कला- संस्कृति और भारत की कला संस्कृति का सम्मिश्रण हुआ। क्योंकि मुगल कला संस्कृति का प्रभाव मुख्य रूप से दक्षिण भारत के कुछ प्रांतों को छोड़कर संपूर्ण भारत में हुआ जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय शास्त्रीय संगीत दो भागों में बंट गया।
वर्तमान समय में हिंदुस्तानी संगीत पद्धति में ध्रुपद ,धमार , ख्याल, ठुमरी ,टप्पा ,दादरा, तराना इत्यादि गायन प्रकार प्रचलित हैं। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं :-

ध्रुपद

स्वर, ताल ,शब्द एवं लययुक्त शैली ध्रुवपद या ध्रुपद कहलाती है।
ध्रुपद का शाब्दिक अर्थ है -वह रचना या गीत जिसमें शास्त्रोक्त संगीत के समस्त पद यानी स्वर ताल शब्द आदि अचल या अधिक हों। वर्तमान संगीत की सर्वाधिक शुद्ध ,स्वर, शब्द और लय ताल से युक्त यदि कोई गायन शैली है तो वह ध्रुपद है। वर्तमान में प्रचलित गायन शैलियां एवं तंत्र सितार आदि जो भी वादन सामग्री है उसका आधार "ध्रुपद" शैली ही है।
ध्रुपद गायकों के अलग-अलग शैली या रीतियां" बानी" थीं। ये बानियां क्रमशः चार थीं - गोबरहार बानी, खंडहर बानी, डागुर बानी और नोहर बानी।

धमार

धमार गायन भी ध्रुपद शैली पर रचित एक गायन शैली है। जिसमें होली की धूम धाम के साथ जिस गीत का गायन होता है उसे धमार गीत कहा गया है।
14 मात्रा की धमार ताल में निबद्ध इस गीत में अधिकांशतः राधा कृष्ण की होरी संबंधी पदों की रचना रहती है और ध्रुपद की तरह स्वर शब्द और लयकारी प्रधान गीत होता है। होली के दिनों में पखावज ,मंजीरे आदि के साथ इस गीत को बड़े उत्साह और उल्लास के साथ गाया जाता है। धमार को मुख्यतः ध्रुपद गायन के पश्चात गाया जाता है।

ख़्याल

वर्तमान समय में ख़्याल हिंदुस्तानी कंठ संगीत का बहुत प्रचलित गायन प्रकार माना जाता है। ख्याल फारसी भाषा का एक शब्द है। जिसका अर्थ कल्पना विचार है परंतु कुछ इसका अर्थ स्वेच्छाचार कहते हैं। इस गायन शैली में कलाकार राग विस्तार अपनी कल्पना से करते हैं और आज के प्रचलित गायन में ध्रुपद की तरह ख्याल गायन भी सबसे प्रचलित है।
ख्याल गायन के भी दो प्रकार माने जाते हैं-

1. विलंबित ख़्याल
2. द्रुत ख़्याल ।

वर्तमान समय में खयाल के मुख्य रूप से 6 घराने माने जाते हैं।

1. ग्वालियर घराना
2. आगरा घराना
3. जयपुर घराना
4. किराना घराना
5. दिल्ली घराना
6. पटियाला घराना ।

ठुमरी

जिन रागों में टप्पा गाया जाता है प्रायः उनमें ही ठुमरी गाई जाती है। यह गीत का वह प्रकार है जिसमें राग की शुद्धता की तुलना में भाव सौंदर्य पर अधिक महत्व दिया जाता है।
इसकी प्रकृति हो ख़्याल की तुलना में चप्पल होती है।
ठुमरी खमाज, देश,तिलक -कामोद, तिलंग, पीलू, काफी ,भैरवी, झिंझोटी, जोगिया, पहाड़ी इत्यादि रागों में गाई जाती है। इसके साथ दीपचंदी अथवा जत ताल बजाई जाती है। शब्द कम होते हैं इसमें शब्दों के भागों को विविध स्वर समूहों द्वारा व्यक्त किया जाता है। इसमें श्रृंगार रस प्रधान होता है और मीड डे कण का खूब प्रयोग होता है। बनारस, लखनऊ और पंजाब की ठुमरियाँ विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

कर्नाटक संगीत पद्धति में कीर्तन,कृति ,वर्णन, पदम, राग- मालिका, जावली, गीतम, पल्लवी, तिल्लाना इत्यादि गायन प्रकार प्रचलित हैं।
जो इस प्रकार हैं:-

कीर्तन व कृति

प्रबंध क्या रचना की दृष्टि से कीर्तन और कृति में कोई अंतर नहीं है। कीर्तन परंपरागत संज्ञा है और कृति संगीत शास्त्रीय द्वारा ग्रहण की गई संज्ञा।
कृति शब्द की व्याख्या है - यत्कृतम ततकृतिः अर्थात् जिसे किया या बनाया जाए वह कृति है।

वर्णम

वर्णम अभ्यास गान के वर्ग में आने वाला प्रमुख प्रकार है जिसकी रचना लगभग 300 वर्ष पहले हुई। गायक और वादक इसका अभ्यास बड़ी सावधानी और परिश्रम से करते हैं। हर राग में स्थाई आरोही अवरोही और संचारी वर्ण में राग रूप को स्पष्ट करने के लिए रचे जाने के कारण इसका नाम वर्णम है।

पदम्

मूल रूप से पदम ऐसे गीत थे जो मथुरा भक्ति और विद्वता से युक्त होते थे। 17 वी सदी के क्षेत्रज्ञ के पदम अत्यंत प्रसिद्ध हैं। गीत गोविंद की तरह कृष्ण की श्रृंगार लीलाएं इनका वर्ण्य विषय है। साहित्य, रस ,भाव ,संगीत सबकी दृष्टि से यह उत्तम रचनाएं मानी जाती हैं। जीवात्मा, परमात्मा और गुरु के रूप में भक्त, कृष्ण और सखी को लेकर इनकी रचना हुई।

राग मालिका

यह बड़ी चित्त आकर्षक गेय विधा है । जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है इसमें बहुत से रागों की माला होती है यानी एक के बाद एक कई रागों में गीत के खंडों को गाया जाता है लेकिन ताल शुरू से अंत तक एक ही होता है। राग बदलते जाने से श्रोताओं की रूचि शुरू से आखिर तक बनी रहती है। आज कल जितने गीत प्रकार हैं उनमें यह सबसे लंबा है।

जावलि

इसी ठुमरी के समकक्ष कहा जा सकता है लेकिन अलौकिक श्रृंगार के पद होते हैं तथा गेय आकर्षक और इंद्रिय स्तर का होने के कारण सामान्य और मर्मज्ञ सभी तरह के श्रोताओं को तुरंत आकर्षित कर लेती है।
सामान्य रूप से मध्य लय और चंचल प्रकृति के रागों में इसे गाया जाता है। यह राग उत्तर भारतीय रागों से मिलते जुलते हैं, जैसे- परज, झिंझोटी, काफ़ी, बिहाग आदि।

गीतम

अभ्यासगान वर्ग का सरगम प्रकारों के तुरंत बाद सिखाया जाने वाला विशेष तरह का गीत है जिसमें सीधे और सरल स्वरसंचारों के द्वारा राग का रूप प्रकट किया जाता है। मध्य लय का ही प्रयोग होता है।

तिल्लाना

तिल्लाना के साथ गाया जाने वाला गीत प्रकार है जिसमें प्रमुख रूप से तोम, तनन, न, दे धिम ऐसे निरर्थक अक्षर सोलकट्टू अर्थात अक्षर और स्वर तथा चरणम में पद रहता है। कभी-कभी गायन के अंत में भी गाया जाता है। मध्यलय, स्वरों के वक्र प्रयोग और स्वर तथा जाति के कारण जानदार गीत मालूम होता है। इस गीत प्रकार की तुलना हम तराना से कर सकते हैं।
और अगर बात करें रागों की तो बहुत सारे ऐसे राग हैं जो दोनों ही पद्धतियों में समान रूप से गाए - बजाए जाते हैं अंतर केवल उनके नामों का होता है जो इस प्रकार हैं:-
का होता है जो इस प्रकार हैं:-

हिन्दुस्तानी संगीत पद्दति के राग	कर्नाटक संगीत पद्दति के राग
मालकौंस	हिन्डोलम्
भूपाली	मोहनम्
काफी	खरहर प्रिया
यमन	मेच कल्याणी
भैरव	माया मालव गौड़
भैरवी	हनुमन्ततोड़ी
खमाज़	हरि काम्भोजी
पूर्वी	कामवर्धनी
मारवा	गमनप्रिया
तोड़ी	शुभ पन्तु वराली

आसावरी	नट भैरवी
बिलावल	धीर शंकरा भरण

वाद्यों के प्रकार

हमारे भारतीय संगीत में वाद्यों को मुख्य रूप से चार भागों में वर्गीकृत किया गया है जो इस प्रकार हैं:-

1. तत वाद्य
2. अवनद्ध वाद्य
3. सुशिर वाद्य
4. घन वाद्य

तत वाद्य

जिन वाद्यों में तारों का प्रयोग किया जाता है, ऐसे वाद्यों को तत् वाद्यों की श्रेणी में रखा गया है।
जैसे - सितार, सरोद, सारंगी, वायलिन, वीणा आदि।
तत वाद्यों को भी दो वर्गों में विभाजित किया गया है -

1. तत वाद्य
2. वितत वाद्य

अवनद्ध वाद्य

जिन वाद्यों पर चमड़ा मढा हुआ होता है और वह अंदर से खोखले होते हैं ऐसे वाद्यों को अवनद्ध वाद्य कहते हैं।
जैसे - तबला, पखावज, ढोलक, मृदंग, डमरू, नगाड़ा आदि।

सुषीर वाद्य

जिन वाद्यों में वायुके प्रवेश से स्वरोंकी उत्पत्ति होती है वह सुशीर वाद्य कहलाते हैं। इन वाद्यों में मुख से वायु पहुंचाई जाती है, जो छिद्रों में फूंकने से स्वर उत्पन्न होते हैं।
जैसे - बांसुरी, शहनाई, बीन, क्लारोनेट आदि।

घन वाद्य

जिन वाद्यों में किसी धातु अथवा लकड़ी द्वारा स्वर उत्पन्न होते हैं उन्हें घन वाद्यों की श्रेणी में रखा जाता है। जैसे - मंजीरा, झांझ, जयघंटा, नलतरंग आदि।

निष्कर्ष

हमारा भारतीय शास्त्रीय संगीत का गायन एवं वादन पक्ष विभिन्न प्रकार से समृध्द है। जो कि अपनी आदी काल से चली आ रही कला संस्कृति का धरोहर का प्रमाण हैं ।कहा जाता है कि वास्तव में कोई देश तभी समृध्द माना जाता है, जब उसकी कला और संस्कृति समृध्द हो । इस मामले में हमारा भारतवर्ष किसी प्रकार से कम नही हैं। हमारी युवा पीढ़ी को चाहिए कि हमारे देश की कला-संस्कृति रूपि इस अमूल्य धरोहर का सम्मान करें और उसे उन्नति के शिखर पर ले जाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *शारंगदेव, संगीत रत्नाकर*
2. *शर्मा, डॉ. महारानी , संगीतमणी*
3. *वृहस्पति, आचार्य कैलाश चन्द्र देव, ध्रुवपद एंव उसका विकास*
4. *करवाला , श्रीमती लीला, ठुमरी परिचय*
5. *कविमण्डल, डॉ. आ.वी., कर्नाटक संगीत पद्धति*
6. *नागर, डॉ. विधी कथक नर्तन भाग-2*
7. *दाधीच, डॉ. पुरू कथक नृत्य शिक्षा भाग-1*
8. *श्रीवास्तव, हरिशचन्द्र वाद्य शास्त्र*